Toppersnotes®
Unleash the topper in you

EMRS

PGT/TGT

एकलव्य मॉडल आवासीय विद्यालय

भाग - 4

Prelims (Tier - 1)

शिक्षण विधियाँ

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	शिक्षण	1
2	शिक्षण में नवाचार	3
3	शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनाएँ या रणनीतियां	6
4	शिक्षण और अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ	12
5	अधिगम	24
6	अधिगम वक्र	33
7	बालकेंद्रित एवं प्रगतिशील शिक्षण की अवधारणा	36
8	वंशानुक्रम एव वातावरण का प्रभाव	40
9	सामाजिक निर्माण के रूप मे लिंग और इसकी भूमिका	46
10	समाजीकरण प्रक्रियाएँ	50
11	बुद्धि (Intelligence)	55
12	व्यक्तित्व	65
13	व्यक्तिगत विभिन्नताएँ	79
14	अधिगम कठिनाइयों, क्षति आदि से ग्रस्त बच्चों की आवश्यकताओं की पहचान	86
15	प्रतिभावान, सृजनात्मक, विशेष क्षमता वाले अधिगमकर्ताओं की पहचान	97
16	समस्याग्रत बालक : पहचान एवं निदानात्मक पक्ष	104
17	समायोजन की संकल्पना एवं तरीके	110
18	अधिगमकर्ता का मूल्याकंन	117
19	सीखने का मूल्यांकन	122
20	समावेशित शिक्षा एवं विविध अधिगमकर्ताओं की समझ	133
21	समावेशी बच्चों हेतु निर्देशन एवं परामर्श	144
22	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) – 2005	152
23	शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009	155

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020	168

1 CHAPTER शिक्षण

- अध्यापक और विधार्थी के मध्य होने वाली अन्तः क्रिया शिक्षण क्रिया कहलाती है।
- शिक्षण को जॉन ड्यूबी ने त्रिध्रुवीय प्रक्रिया माना है।

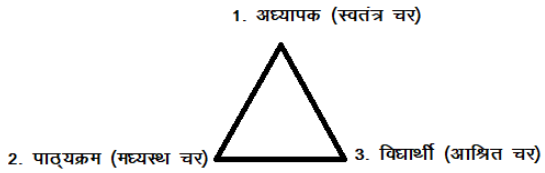

- एडम्स ने शिक्षण को द्वीध्रुवीय प्रक्रिया माना है।
  1. अध्यापक (स्वतंत्र चर)
  2. विधार्थी (आश्रित चर)

  एडम्स के अनुसार शिक्षण एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें एक व्यक्ति दूसरे पर अर्थात् एक दूसरे के विकास में परिवर्तन के लिए कार्य करता है।

परिभाषाएँ

B.O स्मीथ के अनुसार शिक्षण क्रियाओं की एक ऐसी विधि है जो सीखने की उत्सुकता जागृत करती है।

वर्ट के अनुसार शिक्षण अधिगत हेतु प्रेरणा पथ प्रदर्शन व प्रोत्साहन है।

थाइन के अनुसार अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।

शिक्षण की विशेषताएँ

1. शिक्षण एक अन्तः क्रिया है।
2. शिक्षण एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।
3. शिक्षण एक सौदशम प्रक्रिया है।
4. शिक्षण एक विकासात्मक प्रक्रिया है।
5. शिक्षण आमने–सामने होने वाली प्रक्रिया है।
6. शिक्षण एक उपचार विधि है।
7. शिक्षण का मापन किया जा सकता है।
8. शिक्षण एक तार्किक क्रिया है।
9. शिक्षण पथ प्रदर्शन है।
10. शिक्षण निर्देशन की प्रक्रिया है।
11. शिक्षण एक औपचारिक व अनौपचारिक प्रक्रिया है।
12. शिक्षण का कार्य ज्ञान में विकास करना है।
13. शिक्षण वातावरण में समायोजित होने की योग्यता विकसित करता है।
14. शिक्षण एक कौशलपूर्ण प्रक्रिया है।
15. शिक्षण छात्र तथा अध्यापक के मध्य स्वस्थ एवं मधुर सम्बन्ध स्थापित करता है।

शिक्षण के सूत्र

1. ज्ञात से अज्ञात की ओर
2. सरल से कठिन की ओर
3. विशिष्ट से सामान्य की ओर
4. पूर्ण से अंश की ओर
5. विश्लेषण से संश्लेषण की ओर
6. आगमन से निगमन की ओर
7. मूर्त से अमूर्त की ओर

शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण

डॉ. बी.एस. ब्लूम के अनुसार शिक्षण उद्देश्यों का वर्गीकरण–

1. ज्ञाननात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तक सन् 1956 में डॉ. बी. एस. ब्लूम ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे के कक्षा–कक्ष शिक्षण से होता है
- इसके पद निम्नलिखित है –

ज्ञान → अवबोध → ज्ञानाकपयोग → विश्लेषण → संश्लेषण → मूल्यांकन

निम्न — मध्य — उच्च

- शैक्षिक क्षेत्रीय महाविद्यालय – R.C.E
  इनकी स्थापना सन् 1963 में की गई
  1. भोपाल
  2. भुवनेश्वर
  3. शिलॉग
  4. अजमेर
  5. मैसूर
- TIE – Trhionsl Institute of Education
- RCEM ने ब्लूम के ज्ञानात्मक शिक्षण उद्देश्यों में संशोधन किया।
- इन्होंने विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन के स्थान पर सृजनात्मकता शद्ध को रखा।
- इन्होनें ने बताया कि जो अर्थ विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन का होता है वहीं अर्थ सृजनात्मकता का होता है।

2. भावात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तन 1964 में करथवाल ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे की रुचि एवं भावना से होता है।

  प्रश्न – अनुक्रिया निम्न में से किसके अन्तर्गत आती है।

  (A) ज्ञानात्मक (B) भावात्मक
  (C) क्रियात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

1. आग्रहण
2. अनुक्रिया — निम्न स्तरीय
3. अनुमूल्यन
4. प्रत्यभीकरण / प्रत्यक्षीकरण — मध्य स्तरीय
5. व्यवस्थापन
6. गत्यात्मकचरित्र निर्माण — उच्च स्तरीय

3. क्रियात्मक शिक्षण उद्देश्य

इस शिक्षण उद्देश्य का प्रवर्तन सन् 1969 सिंपसन ने किया।

- इसका सम्बन्ध बच्चे की मानसिक एवं शारीरिक क्रियाओं से होता है। पद निम्न है –
  1. उद्दीपन
  2. कार्य करना
  3. नियंत्रण
  4. समायोजन
  5. सम्भावीकरण
  6. आदत निर्माण

N.C.E.R.T के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

प्रश्न – उदाहरण देना निम्न में से किसके अंतर्गत आता है?

(A) ज्ञानात्मक (B) भावात्मक
(C) क्रियात्मक (D) इनमें से कोई नहीं

प्रश्न – प्रयोग करना निम्न में से किसके अंतर्गत आता है?

(A) ज्ञानात्मक (B) अवबोध
(C) ज्ञानोपयोग (D) कौशल

प्रश्न – पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना निम्न में से किसके अन्तर्गत आता है?

(A) अवबोध (B) कौशल
(C) अभिरूचि (D) अभिवृति

प्रश्न – गलती का पता लगाकर उसमें संशोधन करना निम्न में से किसके अन्तर्गत आता है?

(A) ज्ञानात्मक (B) ज्ञानोपयोग
(C) कौशल (D) अभिरूचि

प्रश्न – पहचान निम्न में से किसके अन्तर्गत आती है?

(A) ज्ञान (B) अवबोध
(C) ज्ञानोपयोग (D) कौशल

N.C.E.R.T के अनुसार शिक्षण उद्देश्य

1. **ज्ञान** – पहचान, तथ्य, अव्यय, नियम, सूत्र, चिन्ह् / प्रतीक परिभाषा, सिद्धान्त, क्रियाविधि।
2. **अवबोध** – उदाहरण देना, अपने शब्दों में बताना / व्याख्या करना, वर्गीकरण करना, विश्लेषण, संश्लेषण, सूची बनाना, गलती का पता लगाना।
3. **ज्ञानोपयोग** – प्राप्त ज्ञान का दैनिक जीवन में उपयोग करना, प्रयोग करना, निष्कर्ष निकालना, निर्णय लेना, विधि का चयन करना, गलती में संशोधन करना।
4. **कौशल** – चित्र बनाना, मॉडल बनाना, मानचित्र पढ़ना, ग्लोब बनाना एवं पढ़ना, ग्राफ पढ़ना, सुन्दर शीघ्र शुद्ध लिखना, चार्ट बनाना सारणी बनाना।
5. **अभिरूचि** – पुस्तकालय में जाकर अध्ययन करना, कमजोर विद्यार्थियों की सहायता करना, जीवनियाँ पढ़ना, साहित्य पढ़ना, उपन्यास पढ़ना।
6. **अभिवृति** – सकारात्म (भाषा), आशावादी (SS), धनात्मक (गणित), वैज्ञानिक (विज्ञान)

वह मूल्यांकन जो किसी व्यक्ति के ज्ञान और कौशल की तुलना किसी विशेष समूह के ज्ञान और कौशल से करता है अनुदेशित मूल्यांकन कहलाता है।

- शिक्षण का त्रिसूत्र – मुदालियर आयोग (मा.शि.बोर्ड) ने 1952–1953 में दिया।
- 4H सूत्र – गाँधीजी ने दिया (Health, Hand, Head, Heart)।

Toppersnotes Unleash the topper in you

2 CHAPTER शिक्षण में नवाचार

अभिक्रमित अनुदेशन– अभिक्रमित अनुदेशनें में अनुदेशन का अर्थ ज्ञान देना होता है।

- अभिक्रमित अनुदेशन में अनुदेशन को छोटे–छोटे पदों/प्रकरणों मे विभाजित करके एक निश्चित क्रम में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है।
- इन छोटे –छोटे पदों को फ्रेम कहा जाता है।
- अभिक्रमित अनुदेशन का विचार सबसे पहले आज से लगभग 2000 वर्ष पुर्व सुकरात ने दिया था।
- इन्होंने कहा था कि विद्यार्थी अध्यापक की अनुपस्थिति में भी सीख सकता है।
- सुकरात के विचार को मूर्त रूप प्रदान करते हुए वी. एफ. स्कीनर ने अभिक्रमित अनुदशन की रूपरेखा प्रस्तुत की अतः स्कीनर को अभिक्रमित अनुदेशन के जनक के रूप में जाना जाता है। (1954 में)
- सर्वप्रथम लिखित परीक्षा 1902 में कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय ब्रिटेन में।
- अभिक्रमित अनुदेशन शिक्षण मशीनों पर आधारित तकनीक है।
- सर्वप्रथम शिक्षण मशीन का आविष्कार सन् 1912 में थॉर्नडाइक किया जो अभिक्रमित अनुदेशन पर आधारित थी।
- अभिक्रमित अनुदेशन का आधुनिकीकरण सीडनी, एल फ्रेशे ने सन् 1922 में किया जो ओहियो स्टेट विश्वविद्यालय अमेरिका में प्रोफेसर के पद पर कार्यरत थे।
- अभिक्रमित अनुदेशन अधिगम के क्रिया प्रसुत सिद्धान्त (सन् 1930 वी. एफ. स्कीनर) पर आधारित है।
- भारत में अभिक्रमित अनुदेशन की शुरूआत सन् 1963 इलाहाबाद में की गयी।

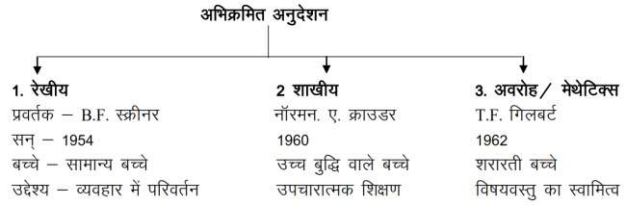

प्रश्न – ब्लूम की पाठ योजना आधारित है।

(a) उद्येश्यों पर (b) प्रस्तुतीकरण
(c) विषय वस्तु पर (d) उपरोक्त सभी

उत्तर – (c)

प्रश्न – वस्तुनिष्ठ प्रश्न का प्रकार है–

(a) आलोचनात्मक प्रश्न (b) विश्लोषणात्मक प्रश्न
(c) मिलान प्रश्न (d) व्याख्यात्मक प्रश्न

उत्तर – (c)

अनुकुलिय अभिक्रमित अनुदेशन – गार्डन पारक

1. **रेखीय अभिक्रमित अनुदेशन/बाह्य अभिक्रमित अनुदेशन** – इस अभिक्रमित अनुदेशन का प्रर्वतन सन् 1954 में बी.एफ. स्कीनर ने किया।
   - यह मुख्य रूप से सामान्य बच्चों के लिए उपयोगी रहा।
   - इस अभिक्रमित अनुदेशन के अंतर्गत विषय वस्तु को छोट–छोटे पद या प्रकरणों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि बालक पहले पद या प्रकरण से संबंधित सवालों के जबाब दे देता है तो अगला पद खुलता है और यदि जवाब नही भी देता है तो भी अगला पद खुलता है जिससे उसके व्यवहार में परिवर्तन होता है अतः इसका मुख्य उद्देश्य व्यवहार मे परिवर्तन है।

2. **शाखीय अभिक्रमित अनुदेशन** – आन्तरिक अभिक्रमित अनुदेशन इस अभिक्रमित अनुदेशन का प्रर्वतन सन् 1960 मे नॉरमन. ए. काउडर ने किया यह मुख्य रुप से उच्च बुद्धि वाले बच्चों के लिए उपयोगी रहा।
   - इसमें विषय वस्तु को छोटे छोटे पद प्रकरणों में इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि बालक पहले पद या प्रकरण से संबंधित सवालों के जवाव दे देता है तो अगला पद खुलता है और यदि जवाब नहीं देता है तो दुबारा से पहला पद खुलता है।
   - बालक सबसे पहले ये देखता है कि मैंने गलती कहां की (गलती का पता लगाना निदान कहलाता है)
   - गलती का पता लगाकर उसको दूर करता है (गलती हो दूर करना उपचार कहलाता है)।
   - अतः इसका मुख्य उद्देश्य उपचारात्मक शिक्षण है।

अवरोह/मैथेटिक्स – इस अभिक्रमित अनुदेशन का प्रवर्तन सन् 1962 मे टी.एफ. गिलबर्ट ने किया। यह मुख्य रूप से शरारती बच्चों के लिए उपयोगी रहा।
इसका मुख्य उद्देश्य विषय वस्तु का स्वामित्व है।

अभिक्रमित अनुदेशन के सिद्धान्त

1. छोटे–छोटे पदों का सिद्धान्त
2. स्वगति का सिद्धान्त
3. तत्परता का सिद्धान्त
4. क्रियाशीलता का सिद्धान्त
5. प्रतिपुष्ठी का सिद्धान्त
6. पुनर्बलन का सिद्धान्त

प्रश्न – शिक्षण प्रक्रिया का प्रमुख अंग है–

(a) शिक्षक (b) विद्यार्थी

(c) पाठयक्रम (d) उपरोक्त मे से कोई नही

उत्तर – (a)

अभिक्रमित अनुदेशन के गुण

- यह मनोवैज्ञानिक पद्धति है।
- यह वैज्ञानिक पद्धति है।
- सीखा हुआ ज्ञान स्थाई होता है।
- इसके द्वारा अध्ययन से छात्रों मे ज्ञानात्मक, भावात्मक एवं क्रियात्मक पक्षों का विकास होता है।
- इसके द्वारा अध्ययन से छात्रों में स्वाध्याय की प्रकृति विकसित होती है।

अधिक्रमित अनुदेशन के दोष

- यह खर्चीली विधि है।
- इसके द्वारा अध्ययन में समय अधिक लगता है।
- इसके अध्ययन द्वारा पाठ्यक्रम को समय पर पूर्ण नही कराया जा सकता है।
- प्रत्येक प्रकरण को इसके माध्यम से नहीं पढ़ाया जा सकता है।
- मंद बुद्धि छात्रों के लिए कम उपयोगी।

दल शिक्षण → जनक–एलन

(Team Teaching)

- दल शिक्षण की शुरूआत सन् 1955 में अमेरिका में हार्वड विश्वविद्यालय में हुयी।
- दो या दो से अधिक अध्यापकों के द्वारा समूह में शिक्षण कार्य कराना दल शिक्षण कहलाता है।
- लेकिन दो या दो से अधिक अध्यापक कभी भी कक्षा में एक साथ नहीं पढ़ाते।

दल शिक्षण के प्रकार

1. आम सभा सत्र– इस दल शिक्षण के अंतर्गत सभी विद्यार्थियों को एक बड़े हॉल में एक साथ बिठाकर शिक्षण कार्य कराया जाता है।
2. लघु सभा सत्र – इस दल शिक्षण के अंतर्गत विद्यार्थियों को उनकी बुद्धि लब्धि के आधार पर छोटे–छोटे वर्गों में विभक्त करके शिक्षण कार्य कराया जाता है जो उनकी प्रगति में सहायक होता है।
3. प्रायोगिक प्रशिक्षण सत्र – इस दल शिक्षण के अंतर्गत किसी भी प्रायोगिक विषय या प्रकरण पर प्रयोग कराये जाते हैं।

पुराने प्रकार

अथवा

1. एक ही विद्यालय के एक ही विषय के अध्यापक
2. एक ही विद्यालयों के विभिन्न विषयों के अध्यापक
3. विभिन्न विद्यालय के एक ही विषय के अध्यापक

दल शिक्षण के चरण

- दल शिक्षण की योजना
- दल शिक्षण का प्रस्तुतिकरण
- मूल्यांकन

इकाई योजना – मॉरीशन

प्रश्न – ईकाई योजना में सोपानों की संख्या है–

(a) 2 (b) 4

(c) 5 (d) 6

उत्तर – (d)

प्रश्न – निम्न मे से सत्य है–

(a) पाठ योजना→वार्षिक योजना→इकाई योजना

(b) पाठ योजना→इकाई योजना→वार्षिक योजना

(c) वार्षिक योजना→इकाई योजना→पाठयोजना

(d) इकाई योजना→पाठयोजना→वार्षिक योजना

उत्तर – (b)

- दो या दो से अधिक पाठ योजना को लेकर एक सप्ताह के लिए बनाई गई योजना इकाई योजना कहलाती है।
- इकाई योजना के जनक – एच.सी. मॉरीशन

बॉसिंग के अनुसार – इकाई के अंतर्गत छात्रों की वे संबंधित क्रियाए आती हैं जिनसे शैक्षिक महत्वपूर्ण उद्देश्यों की पूर्ति एवं छात्रों के व्यवहार परिवर्तन में सहायता मिलती है।

इकाई योजना के सोपान

1. पाठ्यवस्तु– इकाई योजना के प्रथम स्तम्भ में पाठ्य वस्तु का उल्लेख किया जाता है।
2. पाठ्यवस्तु को विस्तार से ना लिखकर संक्षेप में बिन्दुवार लिखना अच्छा रहता है और बिन्दुओं में स्पष्टता का ध्यान अवश्य ही रखा जाना चाहिए।
3. उद्देश्य – इकाई योजना के इस स्तभ्य में उद्देश्यों का लिखा जाना आवश्यक है एवं उद्देश्य लिखने के साथ–साथ यह भी स्पष्ट लिखा जाना चाहिए कि छात्रों में व्यवहार परिवर्तन क्या हुए।
4. अध्यापक क्रियाएँ – इकाई योजना के इस स्तम्भ मे शिक्षक क्रियाओं का उल्लेख किया जाता है। वह जो भी क्रिया करता है उसका लेखन किया जाता है जैसे प्रश्न पुछना, भाषण देना, उदाहरण देना, मानचित्र चित्र दिखाना आदि क्रियाओं का स्पष्ट विवरण देता है।
5. छात्र क्रियाए– इस स्तम्भ में छात्रों की सभी प्रकार की क्रियाओं का उल्लेख किया जाता है जैसे प्रश्न पुछना, उत्तर देना, मानचित्र/रेखाचित्र समझना एवं उन्हें बनाने का प्रयास करना।

6. सहायक सामग्री एवं श्यामपट्ट सार – इकाई योजना के इस स्तम्भ में सहायक सामग्री एवं श्यामपट्ट सार का उपयोग किया जाता है।
7. अध्यापक द्वारा उपयोग मे ली जाने वाली सहायक सामग्री जैसे– मानचित्र, चित्र, ग्लोब, भौगोलिक यंत्र आदि का उल्लेख किया जाता है।
8. शिक्षण विषय वस्तु से संबंधित मुख्य–मुख्य बिंदुओं का श्यामपट्ट सार के रूप मे लिखा जाता है।
9. मूल्यांकन – इकाई योजना के अंतिम स्तम्भ में मूल्यांकन आता है मूल्यांकन से अध्यापक अपनी स्वयं की सफलता का पता लगा सकता है और यह भी पता लगाता है कि बालक शिक्षण विषय वस्तु को किस सीमा तक आत्मसार करने में सफल रहा। जिससे कि आगे की पाठ योजना मे शिक्षण प्रक्रिया में वांछित परिवर्तन किया जाना संभव हो सके।
10. और पूर्व निधारित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

इकाई योजना के गुण

1. यह क्रियाशीलता के सिद्धान्त पर आधारित है। क्योकि इसका उद्देश्य बालकों को क्रियाशील बनाये रखना है।
2. इसमें छात्रों की रूचि, क्षमता, योग्यता आदि का ध्यान रखा जाता है।
3. इसके माध्यम से शिक्षण उद्देश्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।
4. इसके अंतर्गत ज्ञान क्रमबद्ध रूप में दिया जाता है।

इकाई विधि के सोपान –	**मोरीशान के अनुसार**
1. अनुसंधान (जाँच)	1. अनुसंधान
2. प्रस्तीकरण	2. प्रस्तीकरण
3. क्रियान्विति (आत्मीकरण)	3. क्रियान्विति
4. अभिव्यक्तिकरण (कथन)	4. अभिव्यक्तिकरण

Toppersnotes
Unleash the topper in you

3 CHAPTER शिक्षण अधिगम की व्यूह रचनाएँ या रणनीतियां

- सरल शब्दों में शिक्षण व्यूह रचनाओं से तात्पर्य ऐसी व्यूह रचनाओं या नीतियों से है, जिसे शिक्षकों द्वारा अपने शिक्षण या अनुदेशन में निर्धारित उद्देश्यों की पूर्ति हेतु काम में लाया जाता है।
- शिक्षण व्यूह रचना शब्द आँग्ल भाषा के शब्द स्ट्रेटिजी का हिन्दी रूपान्तर है।
- **स्ट्रेटिजी** शब्द की उत्पत्ति **ग्रीक भाषा** के शब्द **स्ट्रेटिजिआ** से हुई है, जिसके आधार पर **स्ट्रेटिजी** को किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु अपनाई जाने वाली एक विशिष्ट कार्य पद्धति या योजना के रूप में परिभाषित किया जा सकता है।
- शिक्षण व्यूह रचनाओं से अभिप्राय एक शिक्षक द्वारा विशेष रूप से निर्मित और अपनाई गई उन सभी योजनाओं, विशिष्ट कार्य पद्धतियों तथा साधनों से है, जिनके द्वारा वह अपने विद्यार्थियों का उचित मार्गदर्शन कर उन्हें निर्धारित शिक्षण अधिगम उद्देश्यों की प्राप्ति में अधिक से अधिक सहायता प्रदान कर सके।

शिक्षण नीति क्या है?

- **शिक्षण नीति** का सरल अर्थ है — **पूर्व-शिक्षण नियोजन की कला**।
- यह दो शब्दों का संयोजन है — शिक्षण + नीतियाँ (Teaching + Strategies)।
- शिक्षण एक अन्तःक्रियात्मक प्रक्रिया है जो कक्षा की परिस्थितियों में शिक्षक और छात्र द्वारा वांछित उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु सम्पन्न होती है।
- नीति शब्द का अर्थ सामान्यतः युद्ध कौशल से जुड़ा है, परंतु शिक्षा में इसे उस कौशलपूर्ण व्यवस्था के रूप में लिया गया है जिससे शिक्षक कक्षा में उद्देश्यों की पूर्ति करता है और छात्रों के व्यवहार में परिवर्तन लाता है।

डेविस के अनुसार "नीतियाँ शिक्षण की व्यापक विधियाँ हैं।"

स्टोन्स एवं मॉरिस के अनुसार "शिक्षण नीति पाठ की सामान्यीकृत योजना है, जिसमें वांछित व्यवहार परिवर्तन, उद्देश्यों, निर्देशों एवं योजनाबद्ध युक्तियों का समावेश होता है।"

स्ट्रेसर के अनुसार "शिक्षण नीतियाँ ऐसी योजनाएँ होती हैं जिनमें शिक्षण के उद्देश्य, व्यवहार परिवर्तन, पाठ्यवस्तु, कार्य-विश्लेषण, अधिगम अनुभव और छात्रों की पृष्ठभूमि को विशेष महत्त्व दिया जाता है।"

शिक्षण अधिगम नीतियों की विशेषताएँ :

- शिक्षण नीतियाँ किसी प्रतिमान की ओर संकेत करती हैं।
- शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक होती हैं।
- व्यवहार परिवर्तन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।
- कार्य विश्लेषण एवं संरचना में महत्त्वपूर्ण होती हैं।
- शिक्षक की कार्यनिष्ठा और शिक्षण कुशलता बढ़ाती हैं।
- शिक्षण प्रक्रिया को उन्नत एवं वैज्ञानिक आधार प्रदान करती हैं।
- बुद्धि, अध्यवसाय, स्पष्ट चिन्तन और कार्यशालाओं के प्रत्यय का विकास करती हैं।
- शिक्षा दर्शन, अधिगम सिद्धांत, पृष्ठपोषण आदि तत्व इन नीतियों में निहित होते हैं।
- शिक्षण प्रक्रिया को क्रमबद्ध और सार्थक बनाती हैं।
- शिक्षण नीतियाँ शिक्षक के नियंत्रण में रहती हैं, और आवश्यकता अनुसार उनमें परिवर्तन किया जा सकता है।

विभिन्न प्रकार की शिक्षण अधिगम नीतियाँ :

1. व्याख्यान रणनीति (Lecture Strategy)

- ✓ किसी पाठ या विषय को भाषण के रूप में कक्षा में पढ़ाना।
- ✓ शिक्षक मुख्य रूप से बोलता है, छात्र निष्क्रिय होकर सुनते हैं।
- ✓ यह विधि उच्च कक्षाओं के लिए अधिक उपयोगी मानी जाती है।
- ✓ **लाभ:** विषय की जानकारी प्रभावी रूप में दी जा सकती है।
- ✓ **सीमाएँ:**
  - छात्र में स्वयं सीखने की प्रेरणा कम होती है।
  - प्राप्त ज्ञान के व्यावहारिक प्रयोग की क्षमता विकसित नहीं होती।
  - शिक्षक को पता नहीं चलता कि छात्र कितना समझ पाया।

2. अन्वेषण रणनीति (Discovery Strategy)

- ✓ छात्र स्वयं खोज-खोज कर ज्ञान अर्जित करते हैं।
- ✓ शिक्षक मार्गदर्शक के रूप में होता है, जो गलतियों को सुधारने में मदद करता है।
- ✓ छात्र प्रयोग-प्रयोग करते हुए ज्ञान प्राप्त करते हैं।
- ✓ **जन्मदाता: प्रो. आर्मस्ट्रॉंग।**
- ✓ **विशेषता:** छात्र अन्वेषक की भाँति कार्य करता है, प्रयोग और अध्ययन से तथ्य एवं सिद्धांत खोजता है।

3. दत्त कार्य रणनीति (Assignment Strategy)

- ✓ छात्रों को छोटे-छोटे कार्य दिये जाते हैं जिन्हें वे समय पर पूरा करते हैं।
- ✓ यह नीति स्थायी अधिगम व्यवहारों का निर्माण करती है।
- ✓ लियोनार्ड डगलस के अनुसार दत्त कार्य विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं - छोटे, बड़े, कठिन, सरल आदि।
- ✓ शिक्षक समय-समय पर निरीक्षण और सहायता करता है।
- ✓ छात्र अपने कार्यों का लेखा-जोखा रखता है।
- ✓ सैद्धांतिक, प्रदर्शनात्मक और प्रायोगिक कार्य दत्त कार्य विधि द्वारा स्पष्ट किये जा सकते हैं।

4. वार्तालाप रणनीति (Discussion Strategy)

- ✓ छात्र एक-दूसरे के साथ सहयोगपूर्वक विषय पर विचार-विमर्श करते हैं।
- ✓ शिक्षक वार्तालाप का संचालनकर्ता और निरीक्षक होता है।
- ✓ छात्रों को अपनी बात कहने की स्वतंत्रता दी जाती है।
- ✓ **लाभ:**
  - शिक्षण-छात्र अंतःक्रिया बढ़ती है।
  - विचारों का आदान-प्रदान होता है।
- ✓ सभी छात्रों को बोलने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

5. ट्यूटोरियल रणनीति (Tutorial Strategy)

- ✓ व्यक्तिगत या छोटे समूह में गहन शिक्षण।
- ✓ शिक्षक समूहों के बीच जाकर समस्याओं का समाधान करता है।
- ✓ व्यक्तिगत एवं पढ़ाई से जुड़ी समस्याओं पर विशेष ध्यान।
- ✓ उच्च स्तरीय ज्ञानात्मक एवं भावात्मक उद्देश्यों की पूर्ति।
- ✓ छोटे बच्चों और प्रौढ़ों दोनों के लिए उपयुक्त।

6. प्रदर्शन रणनीति (Demonstration Strategy)

- ✓ शिक्षक एवं छात्र दोनों सक्रिय रहते हैं।
- ✓ शिक्षक प्रयोग-प्रदर्शन करता है, छात्र उसे निरीक्षण कर सीखते हैं।
- ✓ छात्र अपनी शंकाएँ स्पष्ट करते हैं।
- ✓ **विशेषताएँ:**
  - छोटी कक्षाओं के लिए अधिक उपयुक्त।
  - उपकरणों की रक्षा होती है।
  - समय की बचत।
  - छात्र देखते-देखते सीखते हैं।
  - शारीरिक इन्द्रियाँ सक्रिय होती हैं।
  - निरीक्षण, तर्क एवं विचारशक्ति का विकास।

7. प्रायोजना रणनीति (Project Strategy)

- ✓ जॉन डीवी के शिष्य किलपैट्रिक द्वारा प्रस्तावित।
- ✓ छात्र को समस्या प्रस्तुत की जाती है, जो वह रुचि और इच्छा के अनुसार हल करता है।
- ✓ छात्र योजना बनाकर सक्रिय रूप से कार्य करता है।
- ✓ **विशेषताएँ:**
  - छात्र स्वयं अध्ययन व कार्य करता है।
  - शारीरिक एवं मानसिक दोनों प्रकार के कार्य।
  - श्रम के प्रति निष्ठा जागृत होती है।
  - जिम्मेदारी समझना एवं निभाना।
  - धैर्य, संतोष एवं आत्मसंतुष्टि।
  - मनोवैज्ञानिक विधि।
  - स्वयं करके सीखना।
  - विभिन्न विषयों में सहयोग।
  - स्थायी ज्ञान।

8. समस्या-समाधान रणनीति (Problem Solving Strategy)

- ✓ हैमण्ड कार्सी के अनुसार, यह वह क्रिया है जिसमें छात्र ऐसी समस्याएँ सुलझाते हैं जिन्हें वे समझते हैं लेकिन अभी उनके समाधान के लिए समाधान नहीं जानते।
- ✓ छात्र अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार समस्याओं के समाधान में लगे रहते हैं।
- ✓ समस्या स्पष्ट और अधिगम अनुभवों पर आधारित होनी चाहिए।
- ✓ शिक्षक मार्गदर्शन करता है, छात्र विश्लेषण और संश्लेषण कर समाधान खोजते हैं।
- ✓ **सोपान:**
  - समस्या का चयन
  - समस्या प्रस्तुति
  - तथ्य संग्रह
  - परिकल्पना निर्माण
  - समाधान निष्कर्ष
  - मूल्यांकन
  - आलेखन
- ✓ **विशेषताएँ:**
  - छात्र स्वतः समस्या सुलझाते हैं।
  - निरीक्षण एवं तर्क शक्ति का विकास।
  - सामान्यीकरण सीखना।
  - आँकड़ों का मूल्यांकन।
  - पुराने तथ्यों का नए संदर्भ में प्रयोग।
  - सहयोग की भावना।

9. ऐतिहासिक खोज रणनीति (Historical Inquiry Strategy)

- ✓ छात्र किसी घटना के प्रारम्भ से लेकर अंतिम स्तर तक शोध करते हैं।
- ✓ छात्रों को खोजकर्ता के रूप में रखा जाता है ताकि वे वैज्ञानिक अनुसंधान प्रक्रिया समझें।
- ✓ **श्री गर्ग (1973) के अनुसार:** "अनुमान तब तक सत्य है जब तक वह सभी प्रेक्षित घटनाओं को समझा सके।"
- ✓ **जे. एस. ब्रूनर के अनुसार,** खोज विधि में छात्र अपनी आयु, स्तर के अनुसार नवीन ज्ञान खोजते हैं।
- ✓ **विशेषताएँ:**
  - छात्रों को खोजकर्ता बनाना।
  - निरीक्षण, चिन्तन और सूझबूझ का विकास।
  - तथ्यों को समझने का अवसर।
  - रटने की बजाय समझना।
  - सृजनात्मक चिन्तन का विकास।
  - ज्ञानात्मक एवं भावात्मक उद्देश्यों की प्राप्ति।

शिक्षण अधिगम की विधियाँ :

शिक्षण नीतियाँ और शिक्षण विधियाँ दो भिन्न अवधारणाएँ हैं।

- ➢ **शिक्षण विधि** वह शैली है जिसके द्वारा पाठ्यवस्तु कक्षा में प्रस्तुत की जाती है।
- ➢ विधि (Method) का अर्थ है – मार्ग, तरीका या माध्यम।
- ➢ शिक्षक के लिए आवश्यक है कि वह विभिन्न विधियों को समझकर, परिस्थिति के अनुसार सही विधि का चुनाव करे।

1. **संवाद विधि (Dialogue Method)**
   - ✓ संवाद का अर्थ है दो या अधिक व्यक्तियों के बीच वार्तालाप।
   - ✓ संवाद में अभिनय का भी पुट होता है।
   - ✓ **उद्देश्य:**
     - बालकों में मौखिक अभिव्यक्ति का विकास।
     - स्मरण शक्ति का विकास।
     - प्रेरणादायक वाक्यों का प्रयोग।
     - चरित्र निर्माण एवं स्वभाव विकास।
     - प्रभावशाली वाचन कौशल।
     - लिखित अभिव्यक्ति का विकास।
   - ✓ **समस्या:**विद्यालय का वातावरण डर एवं संकोच उत्पन्न करता है, जिससे बच्चे स्वतंत्र वार्तालाप में संकोच करते हैं।
   - ✓ **समाधान:**अध्यापक को बच्चों के संकोच को दूर करना चाहिए, भाषा की अशुद्धियों को सुधारते हुए उन्हें आत्मप्रकाशन के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
2. **सहभागी विधि (Participation Method)**
   - ✓ शिक्षण में शिक्षक और छात्र दोनों की सक्रिय भागीदारी।
   - ✓ शिक्षण तभी सफल होता है जब दोनों पक्ष समान रूप से योगदान दें।
   - ✓ **उदाहरण:** शिक्षक प्रश्न पूछता है, छात्र उत्तर देते हैं; शिक्षक निर्देश देता है, छात्र पालन करते हैं।
   - ✓ **परिभाषा (प्रो. श्रीकृष्ण दुबे):**"यह शिक्षण प्रक्रिया है जिसमें शिक्षक एवं शिक्षार्थी की पूर्ण सहभागिता होती है, जिससे शिक्षण प्रभावशाली और उद्देश्यपूर्ण बनता है।"
3. **योजना विधि (Project Method)**
   - ✓ बालक को सक्रिय रूप से योजना बनाने और उसे कार्यान्वित करने के लिए प्रेरित करती है।
   - ✓ **मरसेल के अनुसार,** यह दृष्टिकोण शिक्षा की वार्तालिकता को प्रदर्शित करता है।
   - ✓ छात्र जीवन की किसी समस्या का अवलोकन करता है, योजना बनाता है, संसाधन जुटाता है और समाधान की ओर कार्य करता है।
   - ✓ **परिभाषा (किलपैट्रिक):** "सामाजिक वातावरण में पूर्ण संलग्नता से किया जाने वाला उद्देश्यपूर्ण कार्य।"
4. **समस्या समाधान विधि (Problem-solving Method)**
   - ✓ प्राचीन काल से प्रयुक्त, सुकरात और संत थॉमस ने भी इसे अपनाया।
   - ✓ इसमें मानसिक और आलोचनात्मक चिंतन महत्वपूर्ण होता है।
   - ✓ शिक्षक छात्रों के सामने समस्या रखता है, छात्र वाद-विवाद एवं तर्क-वितर्क कर समाधान खोजते हैं।
   - ✓ **परिभाषा (गेन):**"मानव के द्वारा नियमों का उपयोग कर किसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए घटनाओं का समूह।"
   - ✓ **परिभाषा (आशुबोल):** "समस्या समाधान में संप्रत्यय का निर्माण और अधिगम की खोज।"
5. **आगमन विधि (Inductive Method)**
   - ✓ विशेष तथ्यों या उदाहरणों से सामान्य नियम निकालना।
   - ✓ छात्र उदाहरणों से निष्कर्ष निकालते हैं, जैसे वस्तुओं का जल में भार वायु की तुलना में कम होना।
   - ✓ **जोजेफ लेंडन के अनुसार** शिक्षक उदाहरण प्रस्तुत करता है, छात्रों से निष्कर्ष निकालवाता है।

6. निगमन विधि (Deductive Method)

- ✓ पहले सामान्य नियम या परिभाषा बताई जाती है, फिर उसे उदाहरण और प्रयोग से स्पष्ट किया जाता है।
- ✓ उदाहरण:
  - पहले नियम बताया कि "जल में वस्तुओं का भार वायु की अपेक्षा कम होता है।"
  - फिर वस्तुओं का जल और वायु में भार मापा जाता है।
- ✓ **जोजेफ लेंडन** के अनुसार निगमन विधि में परिभाषा से शुरू होकर प्रयोग तक पहुँचा जाता है।

7. विश्लेषणात्मक विधि (Analytic Method)

- ✓ किसी विषय, घटना या समस्या को छोटे-छोटे खण्डों में विभाजित करना और उनका विश्लेषण करना।
- ✓ **उद्देश्य:** विषय का गहन ज्ञान प्राप्त करना।
- ✓ **सी. वी. गुड के अनुसार** पहले पूर्ण तथ्य दिया जाता है फिर उसे खण्डों में विभाजित किया जाता है।

8. संश्लेषणात्मक विधि (Synthetic Method)

- ✓ विभाजित खण्डों को जोड़कर विषय को पूर्ण रूप में प्रस्तुत करना।
- ✓ **सी. वी. गुड के अनुसार** विभिन्न खण्डों को जोड़कर पूर्ण चित्र प्रस्तुत करना।
- ✓ यह विश्लेषण की प्रक्रिया का उलटा है।

9. निरीक्षण विधि (Observational Method)

- ✓ छात्र स्वयं वस्तु, तथ्य या घटना का अवलोकन करता है।
- ✓ ध्यान केंद्रित कर संबंधित सभी पहलुओं को जानने का प्रयास करता है।
- ✓ **गार्लिक के अनुसार,** निरीक्षण में वस्तु के भाग, क्रियाएँ और उनके पारस्परिक सम्बन्धों का अध्ययन जरूरी है।
- ✓ निरीक्षण पूर्ण और व्यवस्थित होना चाहिए।

10. प्रश्नोत्तर विधि (Question-Answer Method)

- ✓ शिक्षक सक्रिय रूप से प्रश्न पूछता है, छात्र उत्तर देते हैं।
- ✓ प्रश्न पूर्व-ज्ञान पर आधारित होते हैं, जिससे छात्र आनंदपूर्वक उत्तर देते हैं।
- ✓ शिक्षक प्रश्नों को सरल से कठिन की ओर ले जाता है, जिससे छात्रों का ज्ञान विकसित होता है।
- ✓ प्रश्नों में श्रृंखला बनी रहती है, जो सीखने की प्रक्रिया को सुचारु बनाती है।

अधिगम एक सामाजिक क्रिया के रूप में :

- ➢ सभी बच्चे विकास के दौरान भाषा बोलना सीखते हैं।
- ➢ बच्चों का भाषा सीखना और अधिगम उनके सामाजिक परिवेश पर निर्भर करता है।
- ➢ भारत में रहने वाली बालिका अपनी क्षेत्रीय भाषा सीखती है, जैसे स्पेन में रहने वाली बच्ची स्पेनिश भाषा सीखती है।
- ➢ पाँच वर्षीय बच्चे अलग-अलग सामाजिक गतिविधियों में लगे होते हैं, जैसे कोई स्कूल जाता है, कोई खेती में पिता की मदद करता है, तो कोई अखबार बेचता है।
- ➢ **बचपन के अनुभवों को प्रभावित करने वाले कारक:**
  - ✓ परिवार के सदस्यों की संख्या और आर्थिक स्थिति
  - ✓ परिवार तथा समुदाय के रीति-रिवाज, परम्पराएँ, नैतिक मूल्य और विश्वास
  - ✓ आवास (गाँव, शहर, जनजातीय क्षेत्र)
  - ✓ भौगोलिक स्थिति (पहाड़, समतल, रेगिस्तान, तटवर्ती इलाका)
- ➢ प्रत्येक सामाजिक समूह के रीति-रिवाज, विश्वास, रहन-सहन में भिन्नता होती है।
  - ✓ इसलिए भारत में एक समरूपी भारतीय संस्कृति नहीं बल्कि अनेक भिन्न संस्कृतियाँ हैं।
  - ✓ इसलिए, अलग-अलग समूहों के बच्चे अलग-अलग प्रकार के सीखते और अनुभव करते हैं।

अधिगम का सामाजिक संदर्भ

- अधिगम मानव जीवन की सतत् प्रक्रिया है।
- व्यक्ति जीवन भर अनुभव प्राप्त करता है और उनका उपयोग करता है, यही अधिगम है।
- अधिगम की मितव्ययिता का तात्पर्य है सीखने में लगने वाला समय और प्राप्त परिणाम के बीच का अनुपात।
- सीखना कोई विशेष क्रिया नहीं, बल्कि जीवों की विभिन्न क्रियाओं में पाया जाने वाला परिवर्तन है।
- परिपक्वता अधिगम में मितव्ययिता की आधारशिला है, जिससे सीखना स्थायी होता है।
- शारीरिक एवं मानसिक परिपक्वता अधिक होने पर अधिगम में लगने वाला समय कम होता है।
- इसलिए मितव्ययिता और अधिगम का सहसम्बन्ध धनात्मक होता है।
- सामाजिक अधिगम का आधार है – **समाज मनोविज्ञान (Social Psychology)।**
- व्यक्ति एक-दूसरे से संपर्क करता है और सकारात्मक कारणों से जुड़ता है, नकारात्मक कारणों से पृथक् होता है।
- जन्म से शिशु माता के संपर्क में आता है और प्रतिक्रिया करता है।

मर्सेल के अनुसार "सामाजिक अधिगम की एक विशेषता यह है कि हम इसे निरंतर अनुभव करते हैं, लेकिन अक्सर हमें इसका ज्ञान नहीं होता कि हम सीख रहे हैं।"

लिण्डग्रेन ने कहा "सामाजिक अधिगम की प्रक्रिया सम्पर्क के कारण आगे बढ़ती है।"

- कक्षा में सामाजिक अधिगम के माध्यम से शिक्षण होता है।
- कक्षा शिक्षण शिक्षक-छात्र-पाठ्यक्रम की अन्तःक्रिया से संचालित होता है।
- अन्तःक्रियात्मक व्यवहार उद्दीपन द्वारा प्रबलित होते हैं।

कोलसनिक के अनुसार "अधिगम की मात्रा और गुणात्मकता का निर्धारण अन्तःक्रियात्मकता द्वारा होता है।"

- कक्षा में छात्र एक-दूसरे से भी सीखते हैं और उनका सामाजिक व्यवहार बदलता है।

विलियम एफ. व्हाइट के अनुसार "आधुनिक अधिगम में अन्तःक्रिया का केन्द्रीय स्थान है। छात्र अपने व्यवहार से एक-दूसरे को उद्दीप्त करते हैं और यह व्यवहार दोनों के लिए प्रबल होता है।"

सामाजिक अधिगम में प्रभाव डालने वाले प्रमुख कारक

1. **ध्यान (Attention)** – सामाजिक अधिगम को प्रखर बनाने के लिए आवश्यक।
2. **अनुसरण (Imitation)** – सामाजिक अधिगम में महत्वपूर्ण भूमिका।
3. **एकरूपता (Consistency)** – छात्रों के विचार, आचरण और व्यवहार को दिशा प्रदान करती है।
4. **मॉडल (Modeling)** – सामाजिक अधिगम के लिए आदर्श या प्रतिमान का प्रभाव।
5. **निरीक्षणकर्ता का व्यवहार (Observer's Behavior)** – अधिगम को प्रभावित करता है।
6. **प्रबलन, पुरस्कार एवं दण्ड (Reinforcement, Reward & Punishment)** – सामाजिक अधिगम को बल प्रदान करते हैं।

सामाजिक अधिगम की विशेषताएँ

- सामाजिक अधिगम मितव्ययी होता है।
- इसमें एक साथ अनेक व्यक्ति सीखते हैं।
- व्हाइट के अनुसार "कक्षा में सामाजिक अधिगम के प्रयोग से यह अपेक्षा होती है कि अधिकतर व्यक्ति अपने व्यवहार के प्रतिमान के फलस्वरूप उद्दीपन और प्रबलन से सीखते हैं।"

4 CHAPTER शिक्षण और अधिगम की मूलभूत प्रक्रियाएँ

शिक्षण

- शिक्षण के माध्यम से बालक के व्यवहार में परिवर्तन लाया जाता है।
- **शिक्षा का संकुचित अर्थ -** औपचारिक ज्ञान प्राप्ति से है।
- **शिक्षा का व्यापक अर्थ -** औपचारिक व अनौपचारिक शिक्षा को ग्रहण करना है।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया
  - ✓ **औपचारिक शिक्षा :** वह शिक्षा जो निर्धारित समय व ज्ञान स्थान पर दी जाती है। जैसे- विद्यालय।
  - ✓ **अनौपचारिक शिक्षा :** वह शिक्षा जिसका स्थान व समय निर्धारित नहीं होता है। जैसे- परिवार, समाज ।
- शिक्षण अधिगम प्रक्रिया की व्यवस्था का वर्णन सर्वप्रथम डेवीस ने अपनी पुस्तक Management of Teaching and Learning" में किया। इस व्यवस्था में इन्होंने नियोजन, व्यवस्था, नियंत्रण, मार्गदर्शन के रूप में चार सोपान बताये हैं।

स्मिथ के अनुसार, "शिक्षण प्रक्रिया वह विधि है जो सीखनें की उत्सुकता को जाग्रत करती है।"

टी.एम.रिस्क के अनुसार, " शिक्षण बालकों को सिखाये जाने वाले निर्देश है।"

क्लार्क के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जो छात्र के व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए नियोजित पूर्ण तरीके से संचालित की जाती है।"

मोरीसन के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जहाँ एक परिपक्व व्यक्ति कम परिपक्व व्यक्ति को शिक्षा प्रदान कर तैयार करती है।"

एन.एल. गेज के अनुसार,"शिक्षण प्रक्रियाओं में पारस्परिक प्रभावों को सम्मिलित किया जाता है, जिसमें दूसरों को व्यवहारिक क्षमताओं के विकास का लक्ष्य होता है।"

स्कीनर के अनुसार, "शिक्षण प्रक्रिया पुनर्बलन की आकस्मिताओं का क्रम है।"

एडमंड एमिडन के अनुसार,"शिक्षण अन्तः क्रिया है, जो शिक्षण व छात्र के मध्य प्रचलित होता है।"

रायबर्न के अनुसार, "शिक्षण वह प्रक्रिया है जो छात्रों को उनकी शक्तियों के विकास में सहायक है।"

- शिक्षण, शिक्षार्थी, पाठ्यपुस्तक के मध्य संबंध स्थापित करना शिक्षण कहलाता है।

जेम्स.एम. थाइनके अनुसार, "अधिगम में वृद्धि करना ही शिक्षण है।"

योकम व सिम्पसन के अनुसार, " शिक्षण वह प्रक्रिया है जिससे समूह के लोग अपने अपरिपक्व सदस्यों को जीवन में सामंजस्य स्थापित करते है।"

शिक्षण की विशेषताएँ

- शिक्षण अन्तः क्रिया है।
- शिक्षण विकासात्मक प्रक्रिया है।
- शिक्षण कला व विज्ञान है।
- यह उद्देश्य युक्त प्रक्रिया है।
- शिक्षण तार्किक क्रिया है।
- यह आमने-सामने घटने की क्रिया है।
- शिक्षण सामाजिक एवं व्यावसायिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक निर्देशित प्रक्रिया है।
- शिक्षण उपचार विधि है।

- शिक्षण औपचारिक व अनौपचारिक प्रक्रिया है।
- शिक्षण एक त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया है।
- शिक्षण भाषा-संप्रेषण का कार्य करती है।

शिक्षण के उद्देश्य

शिक्षण के प्रमुख उद्देश्य निम्नलिखित हैं-

1. शिक्षण का उद्देश्य विद्यार्थी को सहायता प्रदान करना है, जिसके द्वारा वह उत्तम विचारक एवं उत्तम कार्यकर्त्ता बन सकें।
2. शिक्षण का उद्देश्य एक सम्पूर्ण मानव का निर्माण है, जिसमें उसके अस्तित्व का प्रत्येक पक्ष पूर्णतः विकसित हो सके।
3. विद्यार्थियों को इस प्रकार सहायता प्रदान करना कि वे अपनी अनुभूतियों एवं प्रत्यक्ष कारणों से समायोजन करते हुए वास्तविकता का बोध प्राप्त कर सके।
4. विद्यार्थी अपने आन्तरिक एवं बाह्य अनुभवों से सामन्जस्य उत्पन्न कर सके।
5. किसी भी समय, किसी की, किसी भी रूप में सहायता कर सके, जिसमें वे स्वयं नवीन अनुभव कर सके तथा रचानात्मक कार्य कर सके।

शिक्षण के प्रकार

1. **शासन के स्वरूप :** तीन प्रकार के होते हैं-
   a. **एक तांत्रिक शिक्षण :** इस प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान मुख्य व बालक का स्थान गौण होता है।
   b. **प्रजातांत्रिक शिक्षण :** इसमें सामाजिक व्यवस्था एवं मानवीय संबंधों को महत्त्व दिया जाता है। इसमें अध्यापक एक पथ प्रदर्शक या मित्र के रूप में बालक को रूचि योग्यतानुसार प्रेरित करता है।
   c. **हस्तक्षेप रहित शिक्षण :** इस प्रक्रिया में छात्र स्वतंत्र होता है, शिक्षक छात्रों के सामने अपूर्ण परिस्थितियाँ प्रस्तुत कर मित्र रूप में उनकी सहायता करता है।
2. **शिक्षण के उद्देश्य की दृष्टि से शिक्षण के प्रकार 03 प्रकार हैं।**
   a. **ज्ञानात्मक शिक्षण :** इस शिक्षण का उद्देश्य समझ विकसित करने से है। इसमें विश्लेषण, संश्लेषण, एवं मूल्यांकन आदि का प्रयोग अधिक होता है।
      - ✓ ब्लूम का ज्ञानात्मक शिक्षण -प्रतिपादक ब्लूम - 1956 में।
      - ✓ ब्लूम में ज्ञानात्मक शिक्षण में 06 तत्व बताए है।
        - ज्ञान
        - बोध
        - प्रयोग
        - विश्लेषण
        - संश्लेषण
        - मूल्यांकन
   b. **भावात्मक शिक्षण :** इसमें शिक्षण के भावात्मक उद्देश्यों जैसे- रूचियों को सीखना, अभिवृत्ति का विकास, मूल्यों में परिवर्तन आदि।
   c. **क्रियात्मक / मनोगत्यामक शिक्षण :** यह मनोशारीरिक कौशल द्वारा शैक्षिक क्षमता प्राप्त करने से संबंधित है।
3. **शिक्षण क्रियाओं के आधार पर 03 प्रकार हैं।**
   a. **प्रस्तुतीकरण :** वस्तु, विषय संप्रत्य को समझना।
   b. **प्रदर्शन :** किसी कार्य को प्रदर्शित करके शिक्षण कार्य सिखाना।
   c. **कार्य करना :** क्रियात्मक पक्ष व कौशल विकास को प्रमुखता।
4. **शिक्षण स्वरूप की दृष्टि से प्रकार 2 प्रकार हैं।**
   a. **वर्णनात्मक शिक्षण :** शिक्षण विषय के वास्तविक तथ्यों का उल्लेख हैं।
   b. **उपचारात्मक शिक्षण :** यह बालकों की समस्या निवारण हेतु उपयोग में लाया जाता है। इसका मुख्य आधार निदानात्मक प्रक्रिया है, क्योंकि निदान के बाद ही उपचार किया जाता है।

5. **शिक्षण स्तरों के आधार पर तीन प्रकार**

a. **स्मृति स्तर**

- ✓ प्रतिपादक - हरबर्ट द्वारा
- ✓ इस शिक्षण में इस बात पर ध्यान दिया जाता है कि बालक को दी गई सूचनाओं को अच्छी तरह से याद रख सके। यह शिक्षण की प्रारम्भिक अवस्था होती है. इसे विचारहीन अवस्था भी कहा जाता है।
- ✓ इसमें तथ्यों को प्रस्तुत कर रटने पर बल दिया जाता है।
- ✓ स्मृति स्तर के अधिगम में चार प्रकार की मानसिक प्रक्रियाएँ होती हैं-
  - प्रत्यक्षीकरण
  - धारण
  - प्रत्यास्मरण
  - पहचान

b. **बोध स्तर**

- ✓ प्रतिपादक - मोरीसन द्वारा
- ✓ इस शिक्षण में याद रखने के साथ-साथ संप्रत्यय के अर्थ एवं इसमें अन्तर्निहित विचारों को समझने पर जोर दिया जाता है।
- ✓ इस स्तर पर मूल्यांकन के लिए अधिकतर निबंधात्मक प्रश्नों का प्रयोग किया जाता है।

c. **चिन्तन स्तर**

- ✓ प्रतिपादक - हण्ढ
- ✓ इस स्तर पर बालक को गहन अध्ययन करवाया जाता है ताकि वह जिज्ञासा को शांत कर सकें व रूचि के अनुसार भविष्य का निर्धारण कर सके।
- ✓ यह स्तर समस्या केन्द्रित है। इस स्तर पर बालक को नवीन ज्ञान एवं अनुसंधान, धैर्य आदि का ज्ञान कराया जाता है ताकि वह समस्या का निदान वैज्ञानिक दृष्टिकोण से कर सके।
- ✓ इसका उद्देश्य छात्रों में आलोचनात्मक एवं सृजनात्मक चिन्तन शक्ति का विकास करना है।

6. **शिक्षण व्यवस्था के आधार पर प्रयोग 2 प्रकार के होते हैं।**

a. **औपचारिक शिक्षण :** इस शिक्षण का समय व स्थाननिर्धारित होता है। औपचारिक शिक्षण पूर्व योजना पर आधारित सुव्यवस्थित व नियमबद्ध होता है। जैसे विद्यालय में शिक्षण।

b. **अनौपचारिक शिक्षण :** इस शिक्षण में समय व स्थान निर्धारित नहीं होता है। बालक के समाजीकरण की प्रक्रिया अनौपचारिक शिक्षण के माध्यम से अधिक सम्पन्न होती है

शिक्षण की अवस्थाएँ

पी. जैक्सन ने 1966 में शिक्षण प्रक्रिया को वैज्ञानिक ढंग से तीन भागों में बाँटा गया हैं-

1. **पूर्व क्रिया अवस्था :** इस अवस्था में अध्यापक कक्षा में प्रवेश करने से पहले शिक्षण की योजना बनाता है। इस अवस्था को **प्रत्यात्मक अवस्था** भी कहा जाता है।
2. **अन्तः क्रिया अवस्था :** इस अवस्था में शिक्षक कक्षा में प्रवेश कर पाठ्य वस्तु को छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत करता है। शिक्षक छात्र के पूर्व ज्ञान की जानकारी प्राप्त कर शिक्षण की उचित युक्तियाँ एवं विधियों का प्रयोग करता है।
3. **उत्तर क्रिया अवस्था :** इस अवस्था में अध्यापक बालकों की शिक्षा के कार्य का मूल्यांकन करता है। मूल्यांकन के माध्यम से अध्यापक यह प्रयास करता है कि बालकों ने किस सीमा तक अधिगम प्राप्त किया है।

शिक्षण के चर 3 प्रकार हैं।

1. स्वतंत्र चर अध्यापक
2. आश्रित चर शिक्षार्थी
3. मध्यम चर पाठ्यक्रम

शिक्षण को प्रभावित करने वाले कारक

1. छात्रों का मनोशारीरिक स्तर
2. अध्यापक की कुशलता
3. अध्यापक का व्यक्तित्व
4. वातावरण का प्रभाव
5. पाठ्य सामग्री व शैक्षिक उद्देश्य
6. शिक्षण प्रक्रिया का नियोजन
7. बालकों की व्यक्तिगत भिन्नता
8. भौतिक संसाधनों की प्राप्ति
9. शिक्षण विधियाँ व सहायक सामग्री
10. शैक्षिक उद्देश्य व मूल्यांकन

उत्तम शिक्षण की विशेषताएँ

- शिक्षण विधि बालक के मानसिक स्तर के अनुकूल हो।
- शिक्षण का उद्देश्य साफ व स्पष्ट हो।
- अध्यापक का अच्छा व्यक्तित्व हो।
- शिक्षण में बालक व पाठ्य सामग्री में परस्पर सहभाव वाला हो।
- शिक्षण में बालक के पूर्ववर्ती ज्ञान का इस्तेमाल हो।
- शिक्षण का कार्य पूरी तैयारी के साथ व प्रणालीबद्ध है।
- छात्रों के समस्या समाधान में शिक्षक का पूर्ण सहयोग हो।
- कक्षा का वातावरण शान्त हो।
- शिक्षण बालक के साथ स्नेहपूर्ण व्यवहार को प्रेरित प्रेरित करें।
- शिक्षण भेदभाव रहित, वैद्य व विश्वसनीय हो।

शिक्षण के सिद्धांत

जेम्स ब्रूनर ने सर्वप्रथम 1963 में सिद्धांतों का प्रतिपादन किया था। शिक्षण के प्रमुख सिद्धांत निम्न हैं-

1. **जीवन से जोड़ने का सिद्धांत :** अध्यापक को पाठ्यक्रम निर्माण एवं उसका संचालन करते समय बालक के जीवन से जोड़कर बनाना चाहिए ताकि बच्चे जल्दी सीख सके व लम्बे समय तक याद भी रख सके।
2. **विषय वस्तु को आकर्षण बनाने का सिद्धांत :** विषय वस्तु जितनी आकर्षण होगी, बच्चा उतना ही जल्दी सीख सकेगा।
3. **रूचि का सिद्धांत :** शिक्षण प्रक्रिया के दौरान शिक्षक को बालकों की रूचि का ज्ञान होना चाहिए। बालक को जो कार्य रूचिकर लगता है, वो शीघ्रता से सीखता है।
4. **विभाजन का सिद्धांत :** अध्यापक को अपनी विषय सामग्री को सरल व स्पष्ट रूप से समझाने के लिए छोटे-छोटे भागों में विभाजित कर बालकों के सामने प्रस्तुत करने पर वे आसानी से सीख पाते हैं।
5. **करके सीखने का सिद्धांत :** क्रिया करके सीखना अधिक स्थायी व प्रभावशाली होता है। माण्टेसरी, किण्डरगार्टन, प्रोजेक्ट प्रणाली में इस विधि से काम करवाया जाता है।
6. **उद्देश्य का सिद्धांत :** उद्देश्य की निश्चितता से शिक्षक अपने कार्य के प्रति पूर्ण रूप से केन्द्रित रहता है जिससे शिक्षण का कार्य बेहतर संपादित होता है। अतः शिक्षक को अपने उद्देश्य के प्रति सतर्क रहते हुए शिक्षण का स्वरूप निर्धारित रखना चाहिए।
7. **चुनाव का सिद्धांत :** शिक्षक को छात्रों की रूचि एवं ग्रहण क्षमता का आंकलन करते हुए नियोजन स्वरूपानुसार छात्र ग्रहण क्षमता के अनुसार उपयोगी विषयों का चयन कर समयानुसार छात्रों के सामने प्रस्तुत करना चाहिए।
8. **पुनरावृत्ति का सिद्धांत :** शिक्षक बालकों को ज्ञान प्रदान करते समय विशिष्ट बिन्दुओं को बार-बार दोहराना चाहिए ताकि वह भूल न सके। जिस कार्य को हम बार-बार करते हैं उसको स्थायी रूप से सीख लेते है। अभ्यास नहीं करने पर किसी क्रिया को व्यक्ति भूल सकता है।